वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

# वेदान्त पीयूष

वर्ष - २६ मार्च - २०२६ प्रकाशन - 03

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

# वेदान्त पीयूष

## मार्च २०२६

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

# वेदान्त पीयूष

## विषय सूचि

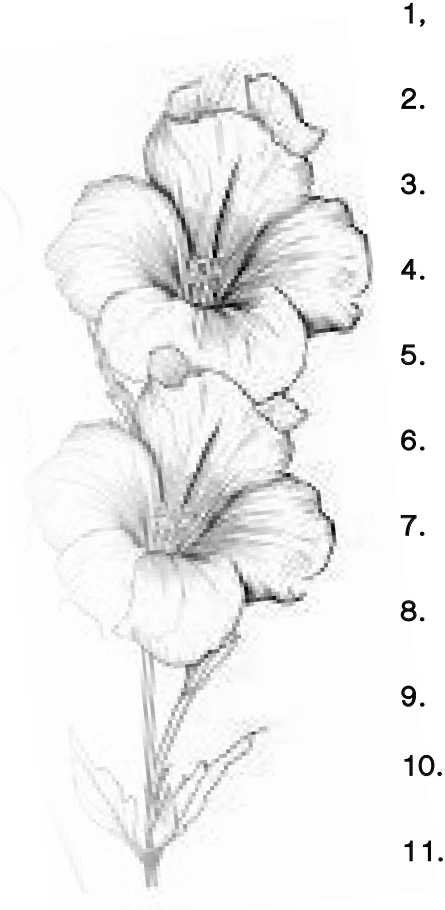


| | | |
|---|---|---|
| 1, | प्रकाशक पृष्ठ | 02 |
| 2. | श्लोक | 05 |
| 3. | पू. गुरुजी का संदेश | 06 |
| 4. | वाक्यवृत्ति | 14 |
| 5. | गीता और मानवजीवन | 19 |
| 6. | जीवन्मुक्त | 24 |
| 7. | श्री कैकेयी चरित्र | 28 |
| 8. | कथा-ब्रह्मविद्या का अधिकारी | 31 |
| 9. | आश्रम-मिशन समाचार | 34 |
| 10. | आगामी कार्यक्रम | 58 |
| 11. | इण्टरनेट समाचार | 61 |
| 12. | लिन्क | 62 |


मार्च 2026

# आत्मबोध

## श्लोक : ५६

तिर्यगूर्ध्वमधः पूर्ण
सच्चिदानन्दमद्वयम्।
अनन्तं नित्यमेकं यत्
तद्ब्रह्मेत्यवधारयेत्॥

जो उपर भी है, नीचे भी है, जो सच्चिदानन्द, अद्वय अनन्तस्वरूप नित्य, एकमात्र पूर्णतत्त्व है, उसे तुम ब्रह्म जानों।

# सन्देश

## पूज्य गुरुजी
## स्वामी आत्मानन्दजी

# ज्ञान - विज्ञान

## ज्ञान और विज्ञान का अर्थ

भगवद् गीता और अन्य वेदान्त ग्रंथों में, 'ज्ञान' शब्द का तात्पर्य बौद्धिक समझ, दार्शनिक अवधारणा औद दृष्टि को दर्शाने से है, और 'विज्ञान' शब्द सत्य या तथ्य के प्रत्यक्ष अनुभव को दर्शाता है। ज्ञान एक रोड़मेप (मार्गदर्शक मानचित्र) की तरह है, यह हमें दिशा प्रदान करता है, जब कि विज्ञान हमें उस तथ्य के प्रति जाग्रत करता है – यह प्रत्यक्ष अनुभूति है। दोनों महत्वपूर्ण हैं, लेकिन विज्ञान ही स्पष्टतया ज्ञान की जाग्रति और पूर्णता लाता है। मुक्ति या मोक्ष प्रत्यक्ष अनुभूति का ही आशिर्वाद है। ज्ञान प्रेरणा और दिशा देने में मदद करता है। यह ज्ञान को तर्कसंगता प्रदान करता है।

## ईश्वर ही सब का सत्य है :

गीता का अध्याय ७ 'ज्ञान विज्ञान योग कहलाता है, और यहां भगवान ईश्वर को सर्वत्र देखने के 'प्रामाणिक साधन और तरीके

प्रकट करते हैं। इसे न जानते हुए, हम ईश्वर के 'रूपों' को ही ईश्वर का वास्तविक सत्य मान लेते हैं, जिनकी हम विभिन्न स्थानों पर पूजा करते हैं और अन्ततः निराश होते हैं। यदि हम ईश्वर के किसी सतही और अप्रामाणिक पहलू को देखते रहते हैं, तो ईश्वर के ज्ञान का कोई स्थायी और वास्तविक आशिर्वाद नहीं मिलता। ईश्वर हर चीज का सत्य है और इसलिए यह तथ्य कि किसी चीज का अस्तित्व है, यह इस बात का प्रमाण है कि निश्चित रूप से ईश्वर हर चीज में है। तो आइएं, स्वयं भगवान से सुनें कि वे सब में कैसे विद्यमान हैं – उनकी गीता, उनके दिव्य गीत में।

## रूप सहायक है, पर सत्य नहीं :

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, यह स्पष्ट होना चाहिए कि ईश्वर के सभी रूप प्रतीकात्मक है, और वे हमेशा सीमित और नाशवान होते हैं। जिस तरह हमारे पास अपने प्रियजनों की तस्वीरें और मूर्तियां होती है, ताकि हम उनके प्रति अपना सम्मान और प्रेम व्यक्त कर सकें, उसी तरह हमारे पास ईश्वर की कुछ प्रसिद्ध लीलाओं पर आधारित कुछ प्रतीकात्मक रूप हैं। सभी रूप कलाकारों द्वारा उन कहानियों के आधार पर बनाए गए हैं, जो उन्होंने ईश्वर की उस विशेष अभिव्यक्ति के बारे में सुना है।

जिस तरह एक फोटो, मूर्ति या झण्डा केवल प्रतीक होते हैं, उसी तरह मंदिरों में मूर्तियां प्रतीकात्मक हैं। उनके प्रति हमारा प्रेम और सम्मान निश्चित रूप से वास्तविक है और वह हमें आशिर्वाद भी देता है।

विचारशील और बुद्धिमान लोगों के रूप में, हम से यह अपेक्षा की जाती है कि हम ईश्वर के वास्तविक सत्य की जांच करें और इतने भोले न बनें कि सीमित और नाशवान रूप को ही सत्य मान लें। अन्यथा स्पष्टरूप से हम मुख्य बिन्दु को चूक गए हैं। भगवान कृष्ण स्पष्ट रूप से कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति जो किसी दृश्य अभिव्यक्ति को ईश्वर का वास्तविक सत्य मानता है, वह अज्ञानी और भ्रमित है (गीता ७/२४)।

## पहले अपने चारों ओर की दुनिया देखें :

भगवान कहते हैं कि यह संसार ईश्वर के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण है। पूरा संसार, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, जिसमें हमारा शरीर और मन सम्मिलित है, यह इतने विस्मयकारी और जटिल है कि कोई भी एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और करुणा-निधान निर्माता के अस्तित्व की स्तुति किए बिना नहीं रह सकता। आइएं, यहीं से शुरुआत करें। विज्ञान भी उस

अद्भुत

## ज्ञान – विज्ञान

सत्य की खोज करता रहता है – जहां से यह सब शुरु हुआ। उस सत्य को हम ईश्वर कहते हैं। वह प्रकृति, सृष्टि के स्वामी है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि यह सम्पूर्ण जगत हमारी सृजनात्मक शक्ति के द्वारा बनाया गया है – जिसे माया या प्रकृति कहा जाता है। इसलिए यह तथ्य कि हम जीवित हैं और अपने चारों ओर दुनिया देखते हैं, इस बात का प्रमाण है कि इसका सत्य वहीं मौजूद है। ईश्वर का अस्तित्व कुछ ऐसा निश्चित होना चाहिए, जिसमें कोई संदेह न हो। एकमात्र बिन्दु उस हर चीज के सत्य को जानना है, जो अस्तित्व में है। भगवान कहते हैं कि यह प्रकृति दो प्रकार की है – अपरा और परा प्रकृति। अपरा में हार्डवेयर शामिल है, अर्थात् पांच तत्त्वों और उनके सूक्ष्म एवं स्थूल प्रभावों से बनी दृश्य दुनिया और परा सभी में विद्यमान 'जीवन तत्त्व अर्थात् चेतना' है।

ये दोनों बिलकुल अलग और अद्वितीय है। विज्ञान के विपरीत, हमारे वेद यह नहीं मानते कि शरीर और मन के रसायन विज्ञान के कारण 'जीवन' प्रकट होता है। जीवनतत्त्व हमारी इन्द्रियों और क्षमताओं से स्वतंत्र है; ये क्षमताएं केवल इसकी अभिव्यक्ति में मदद करती हैं। इसलिए हमारा शरीर और मन भी बहुत मूल्यवान और महत्वपूर्ण है और इनकी देखभाल की जानी चाहिए, फिरभी हमारे प्रयासों में इन दोनों के बीच स्पष्ट भेद देखना आवश्यक है।

## ईश्वर को अपने 'ज्ञानचक्षु से देखें :

जब हम पांच तत्त्वों से बनी कोई भी चीज देखते हैं, तो वे हमें एक दिव्य संचालक और निर्माता की उपस्थिति का अनुमान लगाने और उसकी पुष्टि करने में सहायक बनना चाहिए। ज्ञान इसके बाद उस अस्तित्व की, प्रकृति की सुन्दरता देखने और उसे प्रामाणिक रूप से जानने के बारे में है। ईश्वर के अस्तित्व के बारे में गहरा विश्वास ही ईश्वर को 'देखने' और 'अनुभव करने' की शुरुआत है। ईश्वर हर जीव के पीछे का अव्यक्त ज्ञान और जीवन है। वस्तुतः यह एक आशीर्वाद है कि ईश्वर का सत्य कोई व्यक्त रूप नहीं है, क्योंकि जो कुछ भी व्यक्त है वह हमेशा सीमित और नाशवान होता है। व्यक्त जगत को केवल उस अविनाशी अव्यक्त दिव्यता में विश्वास करने का माध्यम बनने दें।

ईश्वर आत्मा है, और हर चीज का अद्वितीय सार भी है। जल अपनी अद्वितीय तरलता और तटस्थ पी.एच के कारण जल है – जो एक बहुत ही दुर्लभ और किमती वस्तु है। यही हम सबका सत्य है। इसी तरह ईश्वर स्वयं जल में और जल के रूप में उपस्थित हैं। जल के कारण ही हम किसी वस्तु का स्वाद ले पाते हैं। जल का यह गुण ही है कि कैसे अकेले ईश्वर उसमें प्रकट होते हैं। संसार की

हर चीज को इसी दृष्टि से देखें। वह सूर्य का तेज है जो सूर्य को सूर्य बनाता है। किसी विशेष स्थान की वास्तव में आवश्यकता नहीं है, वह सभी के मूल पदार्थ और सार के रूप में सर्वत्र व्याप्त है। वह सभी प्रकृति के पीछे परम पुरुष है।

मंदिरों की भूमिका निश्चितरूप से है, किन्तु वे केवल उन शुरुआती लोगों के लिए हैं, जो ईश्वर के उस सत्य को देख नहीं पाते, जो स्वयं भगवान ने अपनी गीता में प्रकट किया है। वह सब में व्याप्त है फिर भी सब से परे है और इस प्रकार सभी अभिव्यक्तियों की सीमाओं से अछूता है। ईश्वर को वह जानें जिसके कारण सब का अस्तित्व सम्भव होता है, जीवित रह सकता है और अपने विलक्षण तरीकों से प्रकट हो सकता है। वह सभी फिल्म की प्रस्तुति के पीछे का स्क्रीन है तब आप ईश्वर को सर्वत्र देखते हैं।

## ज्ञान के बाद, विज्ञान के लिए प्रयास करें :

जैसा कि उपर देखा गया है, विज्ञान का अर्थ ईश्वर का अपरोक्ष ज्ञान और अनुभव है। ज्ञान दिशा देता है, जब कि विज्ञान गहराई में मदद करता है। हम जिससे प्रेम करते हैं, वही हमारे जीवन में आता है। प्रेम बहुत शक्तिशाली है। ईश्वर के प्रति प्रेम ही भक्ति है। उस 'ईश्वर'

से प्रेम करें। इसलिए भक्ति ईश्वर के प्रति जाग्रति का मार्ग है। प्रेम अन्य सभी चीजों को नकार देता है और प्रेम एकता, अद्वैत में समाप्त होता है। यही आगे बढ़ने का मार्ग है। गीता के सातवें अध्याय में भगवान भक्ति के बारे में विस्तार से – इसके विभिन्न प्रकार और धरातल, इसमें सहायक और बाधाओं के बारे में बताते हैं। जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में समत्व से युक्त रहना बहुत ही सहायक गुण है और निश्चित रूप से अच्छे पुण्य कर्म से मन शुद्ध और समर्पित हो पाता है। अतः ज्ञान और फिर भक्ति ही ईश्वर क्या है, यह स्पष्ट रूप से जानने का तरीका है और भक्ति उस दिव्यता में जाग्रत होने का मार्ग है।

ओम् तत्सत्

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

# वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

# श्लोक – ३२

यज्ज्ञानात् सर्व विज्ञानं
श्रुतिषु प्रतिपादितम्।
मृदाद्यनेकदृष्टान्तैः
तद्ब्रह्मेत्यवधारय।

श्रुति में जिसके ज्ञान से सब का ज्ञान हो जाता है' इस प्रकार मिट्टी आदि अनेकों दृष्टान्तों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है – वह ब्रह्म है, ऐसा निश्चय करों।

# वाक्य वृत्ति

आचार्य ने यहां विविध श्रुति प्रमाण से ब्रह्म की लक्षणा प्रदान कर रहे हैं। पूर्व श्लोक में मुण्डक उपनिषद् का प्रमाण देते हुए ब्रह्म की सर्वज्ञता के माध्यम से उसे जगत का निमित्तकारण दिखाया था। ब्रह्म जगत का केवल निमित्तकारण ही नहीं, किन्तु उपादान कारण भी है। इसे यहां छान्दोग्य उपनिषद् के प्रमाण से दिखा रहे हैं। छान्दोग्य उपनिषद के षष्ठ प्रपाठक में जहां उद्दालक ऋषि श्वेतकेतू को तत्त्वमसि महावाक्य का उपदेश प्रदान करते हैं। वहां ऋषि बताते हैं कि ब्रह्म ही जगत का उपादान कारण भी है।

साधारणतः जगत में किसी भी वस्तु का निर्माण होता है तो उसमें एक बनानेवाली-चेतन सत्ता होती है, जिसे निमित्त कारण कहा और दूसरा जड़ पदार्थ जिससे उन-उन वस्तु का निर्माण होता है - वह उपादान कारण होता है। जैसे घड़े के निर्माण में घड़े को बनानेवाला कुम्हार-चेतन सत्ता निमित्तकारण है। तथा जिन माटी

आदि जड़ पदार्थों से बनता है वह उपादान कारण है। अर्थात् जगत में किसी भी वस्तु का निमित्त और उपादान कारण अलग होता है। जिसमें एक चेतन है और दूसरा जड़ है। यदि हमने एक घड़े के कारण माट़ी को जान लिया तो समस्त माट़ी के बने संसार को जान लिया जाता है। क्योंकि माट़ी उसके कण-कण में व्याप्त है। एकेन मृत्पिण्डेन विज्ञाते सति सर्वं मृण्मयं विज्ञातं भवति। अर्थात् उपादान वह होता है, जिसे जानने से सब का ज्ञान होता हो जाता है। ऐसा स्वर्णादि अनेकों दृष्टान्तों के माध्यम से दिखाया। इन विविध घटादि नाम-रूपात्मक वस्तुओं के नाश से माटी आदि का नाश नहीं होता है।

जिस प्रकार जगत के विविध पदार्थ उसी

प्रकार इस जगत के भी निमित्त और उपादानकारण है। ब्रह्म की सर्वज्ञता दिखाते हुए उसका निमित्तत्व दर्शाया। किन्तु साथ ही यहां बता रहे हैं कि जगत का उपादान कारण कोई और नहीं है। स्वयं ब्रह्म ही उपादानकारण है। ब्रह्म चेतनदृष्टि से निमित्तकारण और माया की दृष्टि से उपादानकारण है। माया की परमात्मा से पृथक् स्वतंत्र सत्ता नहीं है। वे ही माया को धारण करके ईश्वर बनते है और इसी माया से पंच महाभूतादि रूप समस्त जगत बनता है। इसे ही बताया कि जिस जानने से सब कुछ जान लिया जाता है; यज्ज्ञानात् सर्वं विज्ञातं भवति तद्ब्रह्मेति अवधारय। उसे तुम ब्रह्म जानों। इस प्रकार ब्रह्म को ही जगत का अभिन्न निमित्त-उपादान कारण बताया गया है। समस्त नामरूपात्मक जगत का नाश होने पर भी उसके कारण स्वरूप ब्रह्म का नाश नहीं होता है। उन जगत के अभिन्न निमित्त-उपादान कारण को ही तुम ब्रह्म जानों।

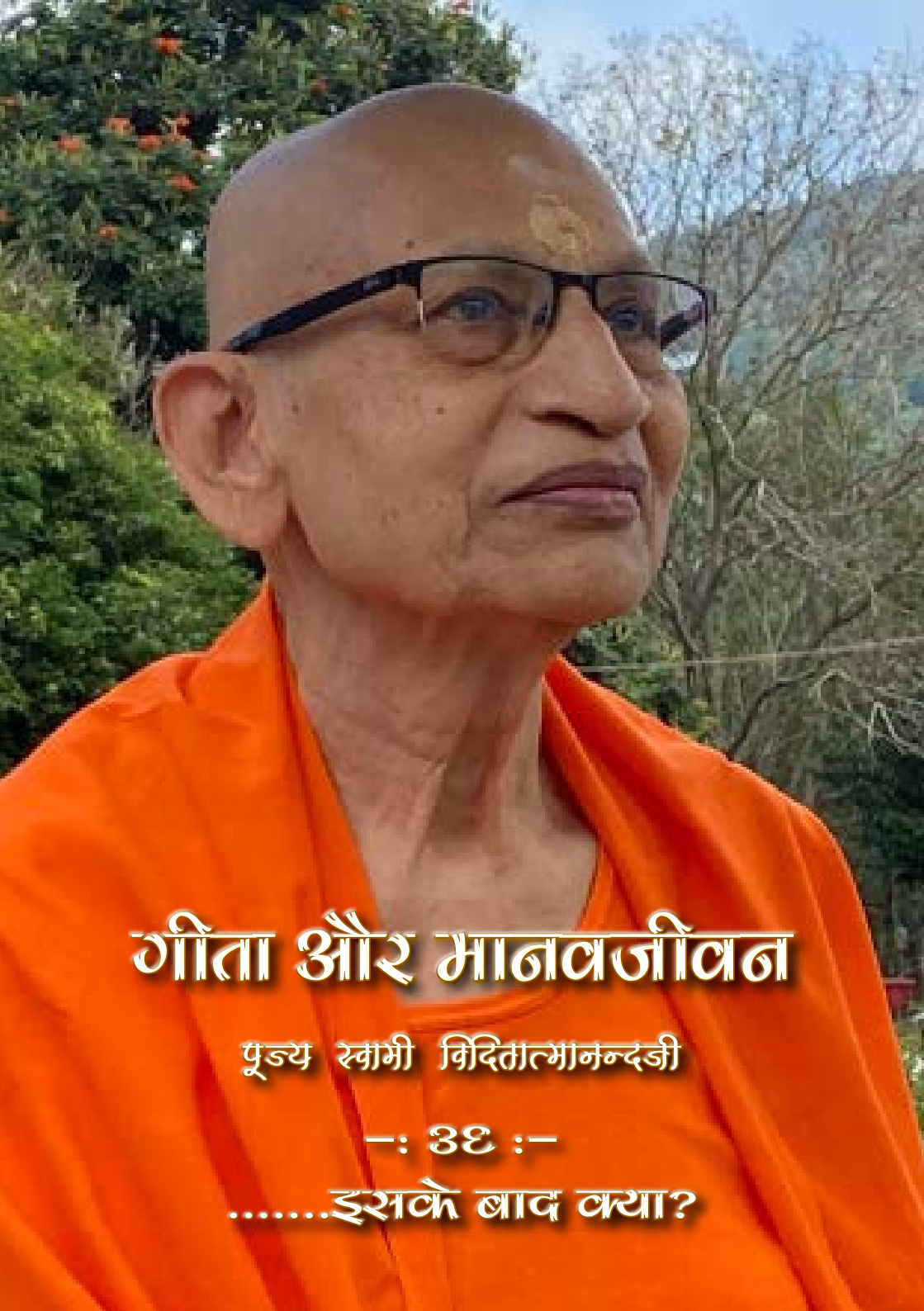

# गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

–: ३९ :–

## .....इसके बाद क्या?

# गीता और मानवजीवन

कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन के समक्ष मानवजीवन का मूलभूत प्रश्न आकर खड़ा रहा। राज्य मिले उससे क्या? स्वर्ग का भोग मिले तो भी क्या? अब समझ में आया कि यह सब सिद्धियां मर्यादित है। उससे हमारे जीवन का मूलभूत प्रश्न सुलझनेवाला नहीं है। क्षणभर के लिए हमें शायद ऐसा लगे कि अब कुछ नहीं चाहिए, किन्तु अन्य ही क्षण में मानो हम अधूरे के अधूरे। यह अधूरापना जब तक दूर नहीं होता है, तब तक शान्ति नहीं होगी। और इसीलिए अर्जुन ने भगवान से कहा, 'मेरे लिए जो भी निश्चित श्रेयस्कर हो वह हमें बताएं, ऐसा श्रेय जिसे प्राप्त करने के उपरान्त कुछ भी पाना शेष न रह जाए।

हम जीवन में अनेक वस्तु प्राप्त करते है, किन्तु प्रत्येक प्राप्ति के पीछे कुछ न कुछ

किंमत चूकानी पडती है। नौकरी नहीं थी, और मिली तब हम बहुत प्रसन्न हुए। किन्तु अब रोज सुबह छह बजे उठ़कर तैयार होना पड़ता है। पहले तो आराम से नौ बजे उठ़ते थे। नौकरी मिलने पर वह स्वतंत्रता चली गई। विवाह नहीं हुआ था तो उसकी तीव्र इच्छा थी। अब विवाह होने के उपरान्त शाम को आधा घण्टा भी देरी से घर जाने पर अनेकों प्रश्नों का सामना करना पडता है, 'कहां गए थे? क्यों देर हो गई?' इत्यादि। पहले तो मित्र के वहां भी सो जाते थे, जो करना था कर लेते थे। वह स्वतंत्रता अब चली गई। संतान नहीं है, संतान होने पर उसके पालन-पोषण की चिन्ता। संतान छोटी हो तो पूरी रात रोना-धोना। थोड़ा बड़ा होने पर उसकी पढ़ाई की चिन्ता। परीक्षा आने पर माता-पिता को उसे पढ़ाने बैठ़ना पड़ता है। इस प्रकार जगत में किसी भी प्राप्ति के लिए किमत तो चूकानी ही पड़ती है।

किन्तु हम यह नहीं सोचते है कि हमें जो चूकाना पड़ता है वह किमत अधिक है या उससे जो प्राप्त होता है वह अधिक है। हमने हिसाब तो किया ही नहीं है। पैसे के हिसाब में हम अवश्य कुशल व चोकस है। किन्तु जीवन के हिसाब में चोकस नहीं है। हमने जो पाया उसके अनुपात्त में कितनी

सारी किमत चुकाई है! देर से जगकर देखते है तब पता चलता है कि हमने जीवन को किसके पीछे व्यर्थ गवाया। यह सब क्या हो गया? और इसलिए सबसे पहले मनुष्य को जीवन के मूलभूत प्रश्न पर विचार करना चाहिए।

दुनिया में भेड़वृत्ति की तरह समस्त देखादेखी में ही चल रहा है। बडे हुए, उच्च विद्यालय में गए, नौकरी लिया, विवाह किया, बच्चे हुए, घर बनाया, बस खतम हो गया, जीवन समाप्त! एक बार स्वामी विवेकानन्दजी अमरिका जा रहे थे। उन दिनों में जहाज से यात्रा करनी पड़ती थी। उस जहाज में एक युवा भी अमरिका जा रहा था। वह पढ़ा-लिखा अकडु था। स्वामीजी को प्रणाम भी न करे, सत्संग में भी न जाएं। स्वामीजी ने सामने चलकर उसनके पास जाकर उसे पूछा, 'क्या नाम है तुम्हारा? तुम कौन हो?' उत्तर मिला, मैं डॉक्टर हूं।' 'कहां जा रहे हो?' 'अमरिका' 'वहां क्या करोगे?' 'खूब सारा धन कमाउंगा।' 'उसके बाद?' 'घर बनाउंगा।' 'उसके बाद?' 'शादी करुंगा' 'उसके बाद' बच्चे होंगे' 'उसके बाद' 'बच्चो का लालन-पालन करके उसे बड़ा करुंगा' 'उसके बाद?' 'उनको भी डॉ बनाउंगा।' 'उसके बाद?' 'वे भी प्रेक्टिस शुरु करेंगे।'

'उसके बाद?' 'फिर हम भारत वापिस आएंगे।' 'उसके बाद?' 'उसके बाद क्या? निवृत्त होंगे।' 'फिर क्या?' अब वो तिलमिला गया। और बोला, 'उसके बाद क्या? फिर मर जाएंगे।' स्वामीजी ने कहा, 'बस? मरने के लिए इतना सारा करना है?'

हम कुछ भी विचार नहीं करते है कि जीवन में किस चीज के लिए इतना जुगाड़ आदि करते है। यह सब नहीं करना है, ऐसा नहीं कहा जा रहा, किन्तु इन सबके पीछे की समझ होना आवश्यक है। उसमें श्रेयस्कर क्या है, उसे समझना आवश्यक है।

# जीवनमुक्त

## - ६८ -

# बदरीनाथ - 3

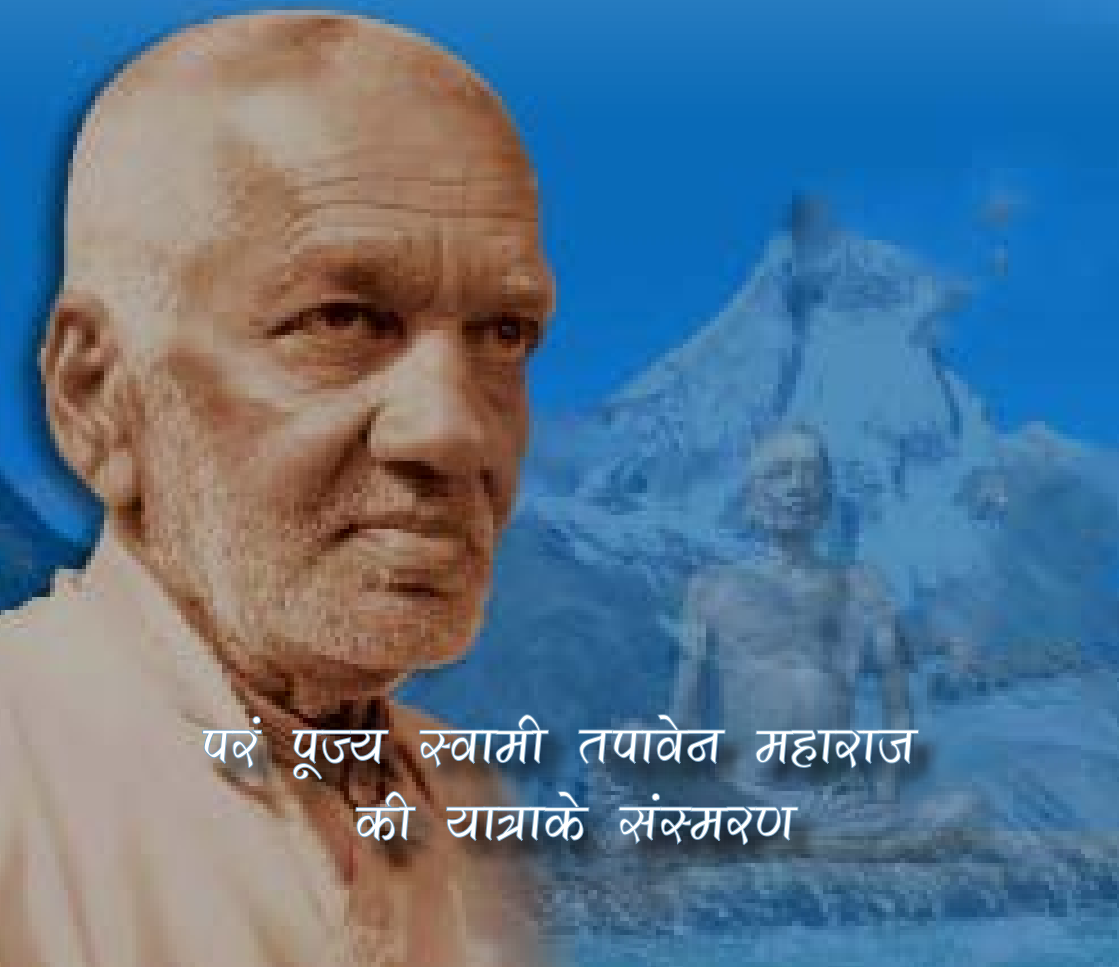

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

# जीवन्मुक्त

हिमालय के कई पवित्र उच्च शिखरों पर मैं अक्सर जाकर रहा करता था। उन स्थानों में जगत का विस्मरण कर परमात्म विचार मे निमग्न होने के सिवा चित्त किसी और विषय में लीन नहीं होता था। किन्तु बदरिकाश्रम में आकर मेरा चित्त केरलभूमि को अधिक स्मरण करता है। यहां पहुंचकर मेरी मातृभूमि की महिमा को याद करते करते मन प्रफुल्लित हो जाता है। मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि बदरीपुरी की आज की महिमा हमारी केरलभूमि की महिमा है। हमारे कर्मसंन्यासी होने पर भी कर्मवीर बने रहनेवाले शंकर ने यहां आकर उस समय की बौद्ध मूर्ति के स्थान पर नारायणमूर्ति की प्रतिष्ठा की थी। यदि उन्होंने मन्दिर को कायम रखने के लिए आवश्यक तथा सुचारु प्रबन्ध न किया होता तो बदरीनाथ जैसा पवित्र तीर्थस्थल हम हिन्दुओं

के लिए नष्टप्राय हो जाता। शंकर हमारे केरल के थे। शंकर की महिमा यदि आज के केरलीय अच्छी तरह नहीं समझते तो यह केवल उन्हींका दुर्भाग्य है, इससे शंकर का महत्व कम नहीं होता। पाक्कनार जैसे ज्ञानी, बिल्वमंगलम् के समान भक्त तथा शंकर के समान आचार्य जिस भूमि में जन्मे और बडे हुए, उस सुधन्य भूमि की महिमा का क्या कहना है? यदि पाक्कनार और बिल्वमंगलम् केवल अपने देश में ही जाने जाते हैं तो श्रीशंकर का नाम आसेतु हिमाचल ही नहीं, अपितु सारे विश्व में पूजा जाता है। हे मातृभूमि! तूं धन्य है जिसने ऐसे अतुलनीय, परम पूज्य, अध्यात्मशक्ति सम्पन्न महिमाशाली चिन्तकों को जन्म दिया है। तेरी महिमा मेरे हृदय में सदा आसीन रहती है।

जब मैं बदरीनाथ मंदिर के द्वार पर बैठकर एक टक दृष्टि से श्रीनारायणमूर्ति के दर्शन करता रहता था और साथ ही कभी कभी केरलीय नंपूतिरीजी से अपनी मलयालम भाषा में बातें करता था तो मुझे बिल्वाद्रिनाथ एवं गुरु पवन

पुराधीश की याद आ जाती थी। हिमाद्रि शिखर पर हमारे केरलीय मंदिरों के ही समान एक नंपूतिरी की पूजा करना भी तो शंकर ही की महिमा है, और शंकर की महिमा में उनकी जन्मभूमि केरलभूमि की ही महिमा निहित है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

# श्री कैकेयी चरित्र

## — ०६ —

प्रनवउं परिजन सहित विदेहू।
जाहि राम पद गूढ सनेहू।।

# श्री कैकेयी चरित्र

इसके पश्चात् कैकेयी के द्वारा दो वरदानों की भूमिका प्रस्तुत करते हुए यह कहा गया कि आपने दो वरदान देने के लिए कहा था पता नहीं वह मिलेंगे भी या नहीं? कैकेयी ने बड़ी चतुराई से विवाह के समय दिए गए वचनों की चर्चा को सामने आने से बचा लिया। इसके दो कारण थे। विवाह के समय प्राप्त अधिकार को कैकेयी ने औदार्य के नशे में स्वतः ही भुला दिया था। श्रीराम को राज्य पद पर अभिषिक्त करने के प्रस्ताव की मुख्य प्रस्ताविका वे ही थी। वे स्वयं पर वचन-भंग का आरोप आने देना नहीं चाहती थी। पर इसका मुख्य कारण दूसरा ही था। कैकेयी की प्रतिशोधवृत्ति की केवल भरत को राज्याभिषेक मात्र से संतुष्टि नहीं हो सकती थी। वे राम से भी अधिक कौशल्या को पाठ पढ़ाने के लिए व्यग्र हो उठी। वे अपनी समझ में ऐसा प्रयास कर रही थी जिससे न केवल कौशल्या की सारी योजनाएं विनष्ट हो जाएं

अपितु नई योजना के माध्यम से उन्हें अधिकाधिक पीड़ित किया जा सके। मन्थरा लोभवृत्ति की मूर्तिमान प्रतीक है। उस लोभ के साथ कुबड़ेपन का कौटिल्य भी मिल गया है। मंथरा उस समय कैकेयी के मन और मस्तिष्क पर पूरी तरह छा गई थी। लोभ में जहां स्वलाभ की चिन्ता ही मुख्य होती है, वहां कुटिलता दूसरों को उत्पीड़ित करने में आनन्द का अनुभव करती है। कैकेयी की मनःस्थिति भी इस समय इसी प्रकार की थी। प्रथम वरदान की अपेक्षा द्वितीय वरदान के प्रति उनका आग्रह इतना तीव्र था कि वे स्पष्ट कर देती हैं कि भरत के राज्याभिषेक में यदि कुछ दिनों का विलम्ब हो तो इसमें कोई आपत्ति नहीं है किन्तु राम का वनगमन तत्काल होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो वे प्राण-त्याग के लिए प्रस्तुत हैं।

कैकेयी के मन में यह सन्देह रहा होगा कि यदि भरत के राज्याभिषक के पहले ही राम का वनगमन नहीं हुआ तो बाद में कई समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। सबसे बड़ी आशंका तो यह थी कि कहीं भरत ही संकोच या अनिच्छा के कारण राज्य लेने का प्रस्ताव अस्वीकार न कर दें। कैकेयी के मन में ऐसी धारण ा होना भी स्वाभाविक ही था कि यदि एक बार रामभद्र को वन भेजा जा सके तो भरत राज्य स्वीकार करने के लिए बाध्य हो जाएंगे। इस तरह कैकेयी ने अपनी ओर से योजना में कोई त्रुटी नहीं रहने दी थी।

# कथा / प्रसंग

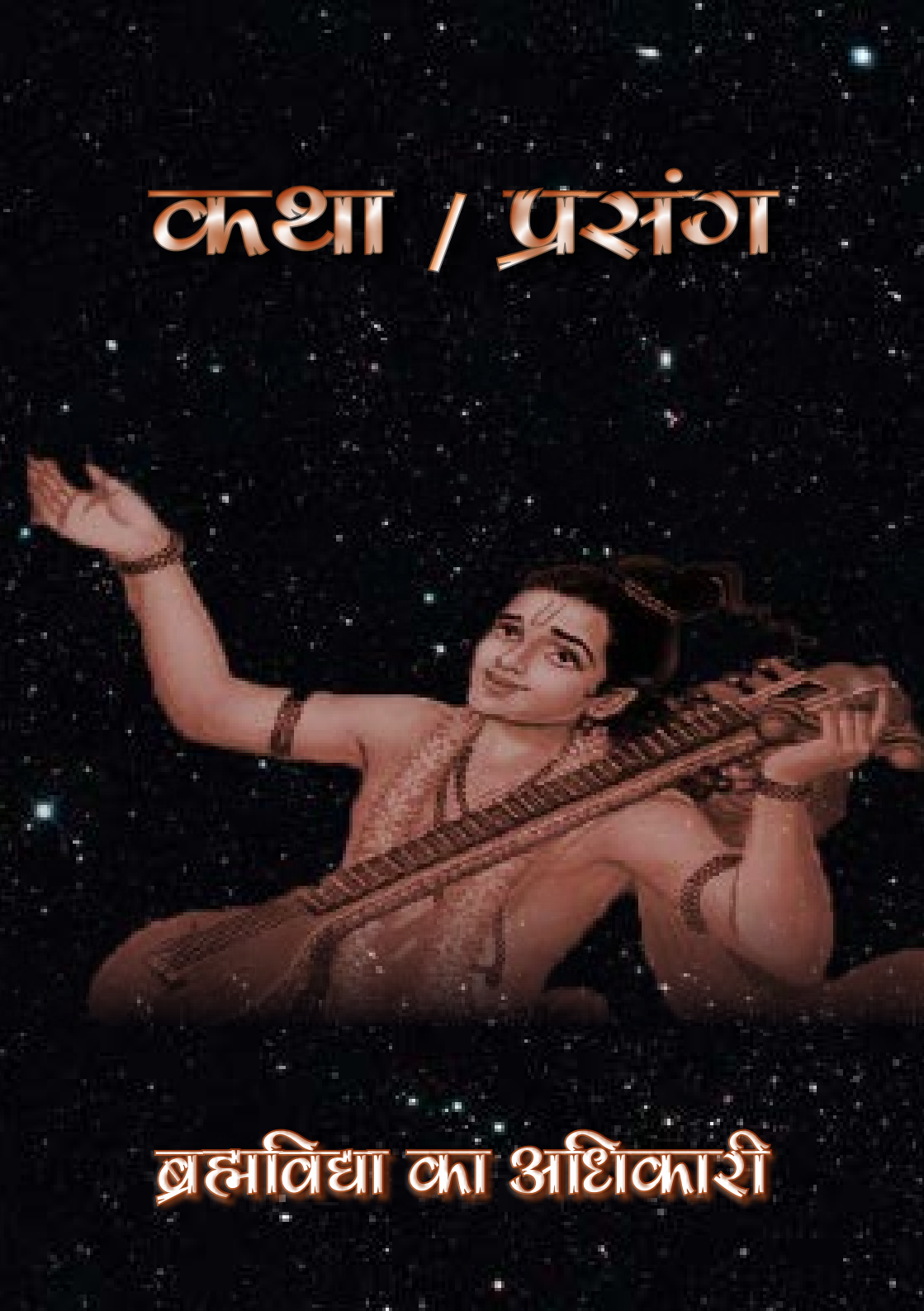

## ब्रह्मविद्या का अधिकारी

# ब्रह्मविद्या का अधिकारी

महर्षि याज्ञवल्क्य प्रतिदिन अपने आश्रम में ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया करते थे। वहां पर अनेको शिष्यगण, मुनिगण तथा राजा जनक भी श्रवण करने आया करते थे। सभी श्रोतागणों के उपस्थित हो जाने पर भी महर्षि तब तक उपदेश का आरम्भ नहीं करते थे, जब तक कि राजा जनक आ न जायँ। यह देखकर श्रोताओं के मन में अनेक प्रकार के सन्देह उठ़ते थे कि, 'कहीं ऐसा तो नहीं है कि महर्षि भी राजा के वश में हों।' कई मुनिगण इस कारण ईर्ष्या से जला भी करते थे। किन्तु कुछ भी बोलने में संकोच करते थे।

याज्ञवल्क्यजी समस्त अन्य श्रोतागणों की मनोयातना को ताड़ गए। एक दिन उन्होंने अपनी योगशक्ति से एक लीला रची जिसकी वजह सक चारों ओर आग लग गई। महाराज जनक के राज्य के साथ आश्रम तक भी लपटें आने लगी। समाचार मिलते ही श्रोतागण आपस में फुसफुसाने लगे। अन्ततः धैर्य टूट गया और एक एक करके सब वहां

उठ़ने लगे और सब अपने धर और कुटि़या की ओर दौड़े। अपने कमण्डलु, वल्कल, वस्त्र तथा अन्य गृहसामग्रियो को वे सुरक्षित करने में जूट़ गएं। उसी समय राजसेवक ने आकर खबर दी कि 'महाराज! मिथिला में आग लगी हुई है। राजा ने सेवक की बात को अनसुना कर दिया, कहा कि 'मिथिला जलने से हमारा कुछ नहीं जल रहा है। जिस समय हम राज सिंहासन पर है, उस समय हमारा कर्तव्य है कि मिथिला की रक्षा करें। किन्तु इस समय ब्रह्मज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य कुछ भी नहीं है।' महर्षि का प्रवचन चालू ही रहा। थोड़े ही क्षणों में महर्षिजी ने अपनी लीला समेट ली। समस्त मुनिगण सर झुकाये हुए आकर बैठ गए। सब को महाराज जनक की पात्रता के बारे में पता लग गया और राजा जनक के प्रति दुर्भावना के बदले में क्षमा याचना करने लगे।

# Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

# आश्रम / मिशन समाचार

## Weekly Online Classes of 'Upadesh Saar' & 'Geeta Ch 7'

# आश्रम / मिशन समाचार

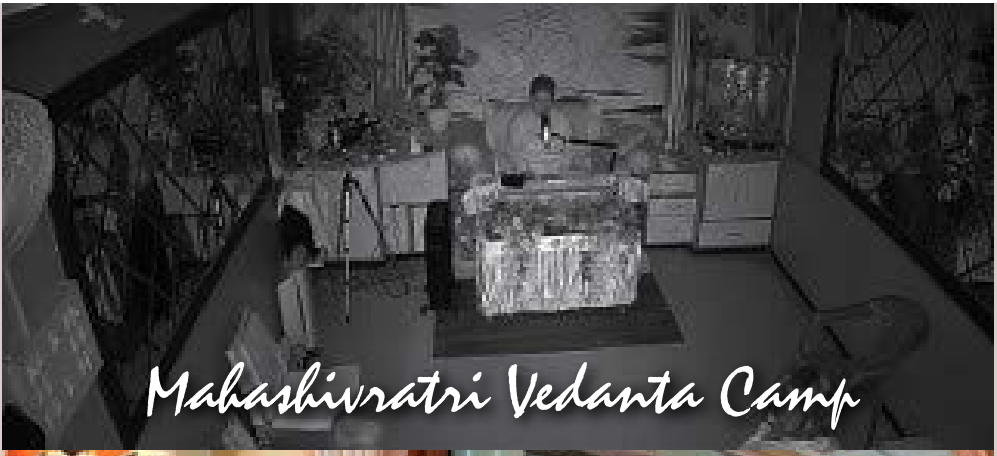

# आश्रम / मिशन समाचार

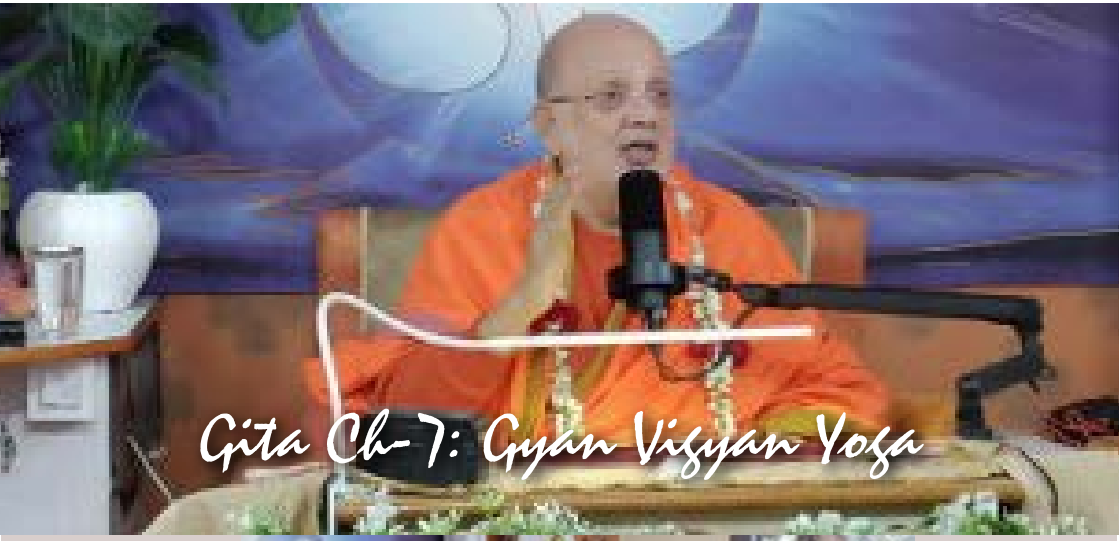

# Vyasa Peetha Pooja

Sanyas Deeksha Day

# 'Gyan Vigyan Yoga' by Pooja Guruji

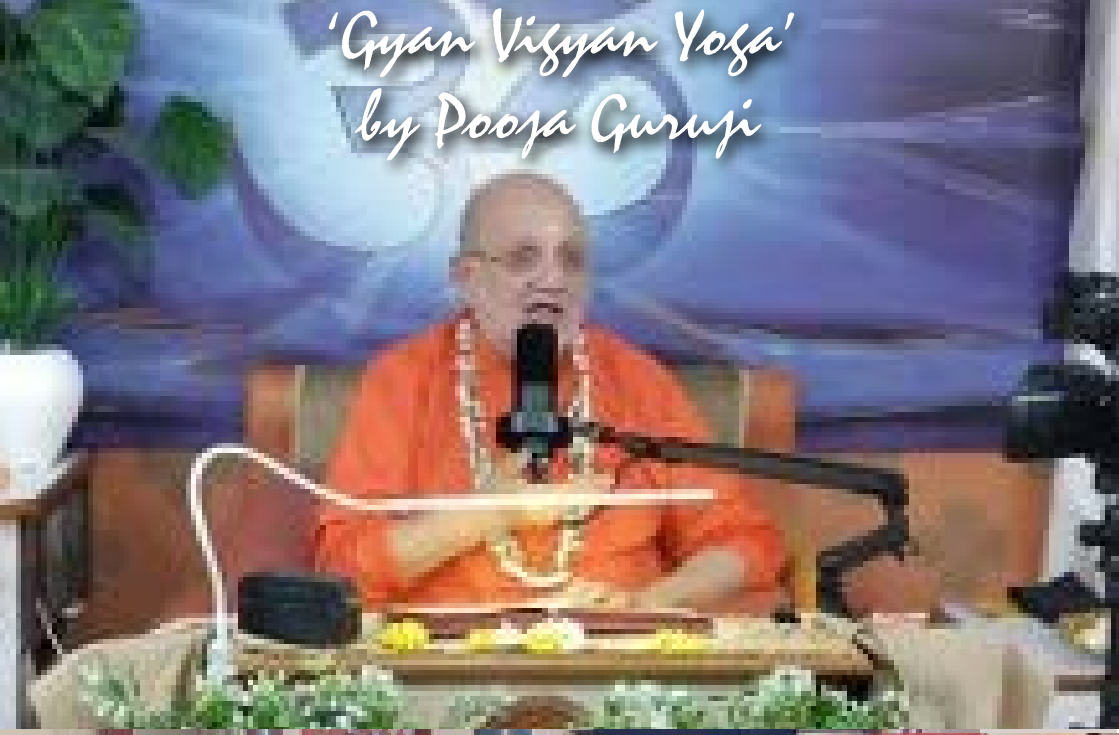

# आश्रम / मिशन समाचार

# आश्रम / मिशन समाचार

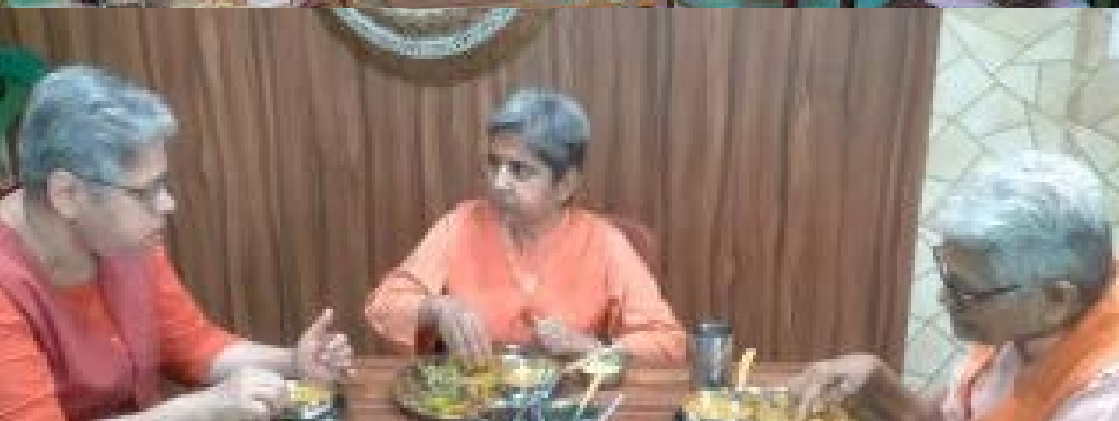

# आश्रम / मिशन समाचार

# Evening Arti of Sri Gangeshwar Mahadev

# आश्रम / मिशन समाचार

# Bhajans with Garba

# Elaborate Pooja

*Daily by Different Devotees*

# Maha Shivaratri Camp

Vyas Peeth Pujan by Campers

# Cultural flavours of India

# आश्रम / मिशन समाचार

Jokes by Manohar

Flute by Deepak

# आश्रम / मिशन समाचार

# Group Photo with Campers

# आश्रम / मिशन समाचार

Mahashivratri Day Puja

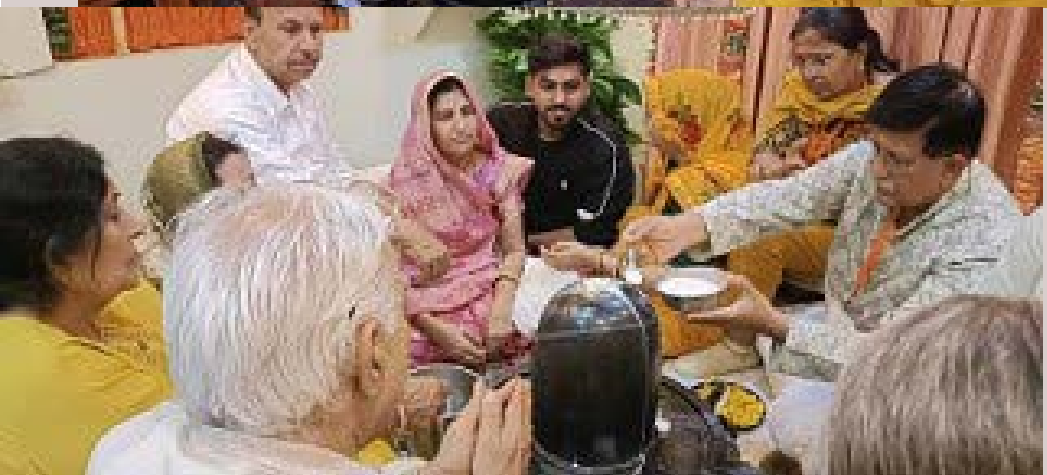

# आश्रम / मिशन समाचार

# Birthday Blessings

*Bade bhaag maanush tan paava*

# आश्रम / मिशन समाचार

## श्रीमद् भगवद् गीता

## (शांकर भाष्य समेत ) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः 7.30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

**पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी**

निःशुल्क

# ऑनलाइन
# साप्ताहिक गीता अध्ययन

## पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी द्वारा

प्रति रविवार
सायं 4.00 से 5.00
Google Meet पर

### कार्यक्रम की रूपरेखा

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 6
आत्म संयम योग (ध्यान योग)

- श्लोक पाठ
- प्रवचन
- ध्यान

Vedanta Ashram / vmission.org.in
Email : vashram1@gmail.com

# आश्रम / मिशन समाचार

## ओनलाईन सत्संग

प्रति शनिवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

भगवान रमण महर्षि विरचित उपदेश सारम्

पूज्य स्वामिनी अमितानन्दजी

## ओनलाईन सत्संग

प्रति रविवार, सायं 4 बजे से

on Google Meet

गीता अध्याय - 6 (ध्यानयोग)

पूज्य स्वामिनी समतानन्दजी

## एकादशी सत्संग

प्रति एकादशी को

on YouTube Channel

पूज्य स्वामिनी पूर्णानन्दजी द्वारा

# INTERNET NEWS

## Talks on (by P. Guruji) :

### Video Pravachans on YouTube Channel

( ☝ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

---

### Audio Pravachans ( ☛ Click here)

GITA / UPANISHAD/ PRAKARAN GRANTHAS/
SUNDARKAND / HANUMAN CHALISA
SHIV MAHIMNA STOTRAM / CHANTING
MORAL STORIES ETC

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

## Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Mar '26

Vedanta Piyush - Feb'26

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore